श्री रक्षाबंधन की (आल्हा) | By Kritika Sharma

चौबीसों जिनराज को पूजूँ मन वचकाय
कुंड कुंड आचार्य को वन्तु शीश नवाये
गुरु गौतम के चरण नमी वंदु शारदा माय
सरस्वती देवी को नमो कीजिये मेरी सहाय
कीजिये मेरी सहाय

समो शरण जब वीर प्रभु का
विपलाचल पर पहुंचा आय
राजा सेनाक प्रश्न कियो है
वीर प्रभु को शीश नवाय
रक्षाबंधन कथा सुना दो
जो मेरे मन गया समाय
किन उपसर्ग कियो मुनिवर को
किन तीनो उपसर्ग मिटाय
दिव्या धुनि जब गिरी प्रभु की
गौतम गांधार रहे समझाय
बारह सभा के सभी सुनेंगे
अरे श्रेणिक सुनलो कान लगाए
पुरु जंगल है देश यहाँ पर

अरे ता हतिनापुर रहो सुहाय
श्री श्रद्धिकुंद और वरहनाथ का
गर्भ जन्म तय भयो है आय
अरे महापद वहां का राजा
राज करे अति ही सुखदाय
अरे लक्ष्मीवति है रानी जिसकी
रूपशील सगुण है दिखाय
राजा के दो पुत्र हुए हैं
पादनाथ औअर विष्णु कहाय
अरे राजा ने जिन दीक्षा धारी
वन में जाए मुनि बन जाए
अरे पडनाथ तो राज करत है
प्रजा पाले है सुखदाये

अरे विष्णु कुमार रे दीक्षा लेले
पिता के संग में पहुंचे जाए
यहाँ की बाते यही रह गयी
अब आगे की कहूं सुनाय
भूल चूक की माफ़ी करना
अरे प्रभु चरनन राहु शीश झुकाय
उज्जैनी नगरी में राजा
राज करत अति ही सुखदाय
उनके मंत्री चार निपन है
अरे एक से बढ़कर एक कहाय
जैन धर्म के कट्टर द्रोही
जिनवाणी नहीं उन्हें सुहाय
बलि और नम मुचि बृहस्पत प्रह्लाद

प्रह्लाद न की चारो उदय बताये
एक समाय पर सूर्य कम्पन
संग मुनि का पहुंचा आय
नर नारी बंधन को चाले
मन में हर्ष भाव चित लाये
राजा मंत्रण से यों पूछी
ये नर नारी किट को रहे आय
इस पर जवाब दिया मंत्री ने
जैन मुनि संग गया है आय
राजा दर्शन की करि है इच्छा
तब मंत्री ने दियो दोष लगाय
मगर सुनी ना उन मंत्रीं की

दर्श हो गया हर्ष चित लाय
पीछे पीछे गये हैं मंत्री
राजा को दर दैहशत खाय
यहाँ की बात यहाँ ही छोडो
अब आगे का रहो सुनाय
राजा मनत्री देखे गुरु ने
सबको दोनों हुक्म सुनाये
मौन सहित सब ही हो जाना
जपयो महामंत्र हर्षाय
राजा मंत्री पहुंचे वहां पर
राजा दर्शन करे हर्षाय
दई प्रदचिन्हा श्री गुरुवर की
चरनन में रहो शीश झुकाय

तो मुनि ने आशीष नदी ने
तब ही बलि बोल ऋषि खाय
ये तो मुनिवर महा मुंड है
ये कुछ भी जानत है नाय
आप प्रणाम कियो है इनको
अरे इन आशीष देइ कुछ नाय
राजा मंत्री चले वहां से
रमेष्वत सागर मुनि मिल जाये
वाद विवाद कियो मंत्रीं ने
श्री मुनि को दियो दोष लगाय
तभी मुनीश्वर उत्तर दीनो
राजा मनि मन रहो हर्षाय
राजा हस्ते देख के मंत्री

चारों मन में गए शरमाये
राजा मंत्री चले वहां से
मंत्री क्रोध बड़ो है भाय
आईटी मुंवार ने अपने गुरु को
दीने है सब हाल बताय
तब गुरु ने कहीं सुना की
क्यों वाद विवाद मंत्रीं से भाय
ये उपसर्ग करेंगे सबको
ये मेरे मन गयी समाय

अरे तब ही मुनिवर मन सकुचाने
श्री गुरु को दियो शीश नवाय
किस विधि से उपसर्ग दूर होय
सो स्वामी तुम देऊ बताय

तभी गुरु ने कहा सुना के
जहाँ पे वाद विवाद हुआ है
ध्यान लगा के ताड़े रहना
जपयो महामंत्र हर्षाय
तुरंत मुनीश्वर रहे जहाँ पर
अरे वाद विवाद हुआ है भाय
ध्यान लगा कर ताड़े होइ गयी
जप रहे महामंत्र हर्षाय
उत से मंत्री चले हैं चारो
गुस्सा रही बदन में छाय
राह में देखा जब मुनिवर को
तभी बलि बोलै ऋषि खाई
इसने तो अपमान कियो है

अरे इस से बदला ले उचकाई
चारों मिलकर मारो इसको
ताते पाप बराबर लग जाए
तब चारों ने खेचिसरोहि
मुनि के ऊपर देइ झुकाय
अरे तब ही वन रक्षक ने किले
ज्यों के त्यों खड़े रहे हैं भाय
सुबह नगर में मचे कोलाहल
नर नारी देखन को आय
अरे मुनिवर को सब शीश झुकाते
मन्त्रिण को रहे ब्यूरो बताये
तब तक देव प्रकट हो बोला
ये मंत्री हत्यारे दिखाय

अरे मुनि की हत्या को आये थे
सौ में कील दिए हैं भाय
राजा नए जब खबर सुनी है
चारों मंत्री लाये बुलाय
काला मुँह कर गधे चढ़ाया
देश निकला दिया करवाय
उज्जैनी से चले हैं मंत्री
हठिनापुर में पहुंचे जाये
राजा पड़राये से मिलकर
एपनिया मन में रहे सिहाय
धन्य धन्य है भाग हमारो
राजक दर्शन मिली हैं आय
हमतो आशा करके आये

अरे सौ स्वामी तुम देऊ बताये
राजा ने जब करि परीक्षा
मंत्री पद दियो इन्हें बताये

चारों मंत्री खुश होकर के
राजा का गुणवान हैं गाये
इक दिन राजा चिंतित बैठे
मल्हन मंत्री देखे जाय
अरे कौन मुसीबत तुम पर पड़ गयी
सो स्वामी तुम देऊ बताय
राजा ने फिर कही सुनाकर
हल बलनि को रही सताय
जो कोई नियम बताऊं भइया
सो वो तुरंत तोड़ दे भाय

अरे शीश नवा कर मंत्री बोले
तुमको कौन पड़ी परवाये
सात दिनों के अंदर अंदर
ुएको देंगे यहाँ झुकाय
कुम्भ नगर को चले हैं मंत्री
देखा राजा हल बल जाय
सेना देखो जब राजा की
अरे तब मन गया सना को खाय
तन चारो नए छुल बल करके
खलबल राजा बांधो जाय
कुम्भ नगर से चले हैं मंत्री
हठिनापुआर में पहुंचे जाय
राजा नए जब खबर सुनी है

राजा मन मैं रहे सिहाय
इति बलि पल में पराधीन हो
नृप आज्ञा मांगी है आय
राजा ने फिर कहा सुनाकर
जो वर मांगे सोइ वर पाय
मंत्री कही वचन भंडारे
रखना वखत पर लेंगे भाय
गयी है सर्दी गयी है गर्मी
अबतो लगाए चौमासा आयी
अरे उज्जैनी से चले मुनिवर
हथिनापुर में पहुंचे आय
चार माह का जोग लगा कर
जप रहे महामंत्र हर्षाय

नर नारी बंधन को चालै
मन में रहे बहुत हर्षाय
मंत्री ने यह खबर सुनी है
संघ मुनिन का गया है आय
पहिलो बात याद जो करके
अरे मन में रह बहुत सरमाय
नृप जैनी है इसमें गड़बड़
करण की इसमें कुछबी आय
गड़बड़ करि सो पहले की सी
बायत कछु न फेर हो जाय
कुछ दिन तो चुपचाप रहे हैं

अरे फिर मालूम इन्हें पड़ जाए
जिन मुनि से अपमान हुआ है

वो ही मुनि आ पहुंचे आय
बदला लेने की मन आयी
इनसे बदला लेउ चुकाय
बार लेकर बदला लेना यह
मन में गयी सबन के भाय
सुबह होत राजा के पास जा
बलि राजा को रहो समझाई
मारवाड़ स्वामी दीजे जो
हम रखा भंडारी जाय
राजा जी खुश होकर बोले
मंत्री जो मांगे सो वर पाय
सात दिन का राज मांग लिया
राजा दे दिया धिक् सिहाय
राजा तोरणवास में पहुंचे
मंत्री राज करे हर्षाय

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b6%e0%a5%8d%e0%a4%b0%e0%a5%80-%e0%a4%b0%e0%a4%95%e0%a5%8d%e0%a4%b7%e0%a4%be%e0%a4%ac%e0%a4%82%e0%a4%a7%e0%a4%a8-%e0%a4%95%e0%a5%80-%e0%a4%86%e0%a4%b2%e0%a5%8d%e0%a4%b9%e0%a4%be-by-kritika/